

## साँची स्तूप से यूरोप की यात्रा

### चर्चा में क्यों?

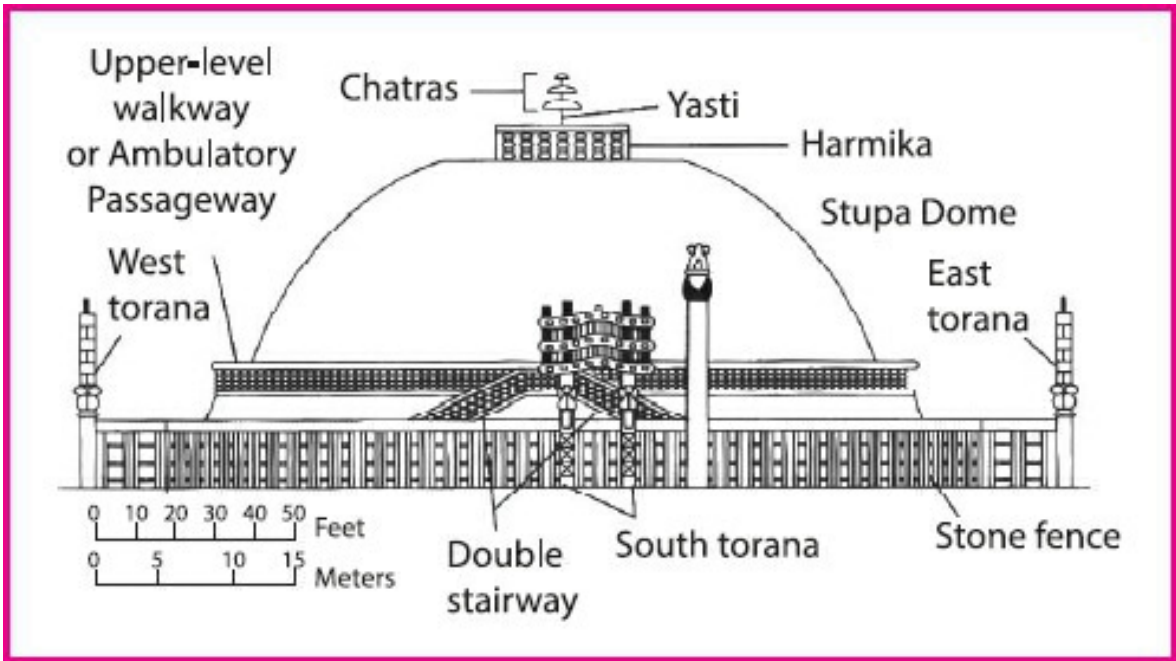
हाल ही में भारत के विदेश मंत्री ने जर्मनी के बर्लिन में [हम्बोल्ट फोरम संग्रहालय](#) के सामने स्थिति [साँची स्तूप के पूर्वी द्वार](#) की प्रतिकृति का दौरा किया।

### मुख्य बटु

- **साँची स्तूप का निर्माण:** इसका निर्माण **अशोक** ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में करवाया था।
  - इसके निर्माण की देख-रेख **अशोक की पत्नी देवी** ने की थी, जो पास के व्यापारिक शहर **वदिशा** से थीं
  - साँची परिसर के विकास को वदिशा के **व्यापारिक समुदाय के संरक्षण से समर्थन प्राप्त हुआ**।
- **वसितार:** दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व (**शुंग काल**) के दौरान, स्तूप को बलुआ पत्थर की पट्टियों, एक **परकिर्मा पथ** और एक **छत्र (छाता)** के साथ एक **हर्मिका** के साथ वसितारित किया गया था।
  - पहली शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी तक, चार पत्थर के प्रवेश द्वार या **तोरण बनाए गए**, जो बौद्ध प्रतमा विज्ञान और कहानियों को दर्शाती वसितृत नक्काशी से सुसज्जित थे।
- **साँची स्तूप की पुनः खोज:** वर्ष **1818** में जब ब्रिटिश अधिकारी **हेनरी टेलर** ने इसकी खोज की थी तब यह पूरी तरह खंडहर अवस्था में था।
  - **अलेक्जेंडर कनिंघम** ने वर्ष **1851** में साँची में **प्रथम औपचारिक सर्वेक्षण और उत्खनन का नेतृत्व** किया
- **संरक्षण के प्रयास:** वर्ष **1853** में भोपाल की सकिंदर बेगम ने **महारानी वकिटोरिया** को **साँची** के प्रवेशद्वार भेजने की पेशकश की, लेकिन **वर्ष 1857 के विद्रोह** और परिवहन संबंधी समस्याओं के कारण प्रवेशद्वार हटाने की योजना में देरी हुई।
  - वर्ष 1868 में बेगम ने फरि से प्रस्ताव दिया, लेकिन औपनिवेशिक अधिकारियों ने इसे अस्वीकार कर दिया और **यथास्थान संरक्षण का विकल्प चुना**। इसके बजाय पूर्वी प्रवेशद्वार का **प्लासटर कास्ट** बनाया गया।
  - इस स्थल को इसकी वर्तमान स्थिति में 1910 के दशक में **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के महानिदेशक **जॉन मार्शल** द्वारा निकटवर्ती भोपाल की बेगमों से प्राप्त धनराशि से बहाल किया गया था।
    - **मार्शल के प्रयासों से वर्ष 1919** में उस स्थान पर कलाकृतियों को संरक्षित करने और संरक्षण का प्रबंधन करने के लिये एक संग्रहालय का निर्माण किया गया।

### साँची स्तूप की वास्तुकला

- **अंडाकार:** यह धरती पर बना एक **अर्द्धगोलाकार टीला** है।
- **हर्मिका:** टीले के ऊपर **चौकोर रेलगि** है। ऐसा माना जाता है कि यह भगवान का निवास स्थान है।
- **छत्र:** यह गुंबद के शीर्ष पर बनी **छतरी** है।
- **यष्ट:** यह **केंद्रीय स्तंभ** है जो छत्र नामक तहिये छत्रनुमा संरचना को सहारा देता है।
- **रेलगि:** यह **स्तूप के चारों ओर लगी होती है**, पवतिर क्षेत्र को सीमांकित करती है तथा पवतिर स्थान और बाहरी वातावरण के बीच एक भौतिक सीमा प्रदान करती है।
- **प्रदक्षिणापथ (परकिर्मा पथ):** यह **स्तूप के चारों ओर एक पैदल मार्ग** है जो भक्तों को पूजा के रूप में दक्षिणावर्त दिशा में चलने की अनुमति देता है।
- **तोरण:** तोरण बौद्ध स्तूप वास्तुकला में एक **स्मारकीय प्रवेश द्वार या प्रवेश संरचना** है।
- **मेधी:** यह उस **आधार को संदर्भित करता है** जो एक मंच बनाता है जिस पर स्तूप की मुख्य संरचना खड़ी होती है।
- **UNESCO मान्यता:** साँची स्तूप को वर्ष 1989 में **UNESCO विश्व धरोहर स्थल** के रूप में अंकित किया गया था।



PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/journey-of-sanchi-stupa-to-europe>

